11 ज्ञान किसी की निजी संपत्ति नहीं होती

पाठ " ज्ञान किसी की निजी संपत्ति नहीं है।

शब्दार्थ (12)

विद्वान नवरत्न ज्ञानी
सैर समस्या परिचय अतिथि
चकित घमंड मार्ग अभ्यास
ज्ञान

पाठ 11

बोलिए

1. **पढ़िए**

उ. छात्र स्वयं करें।

2. **बताइए** (Book)

क. शास्त्रार्थ में विद्वानों के अतिरिक्त कौन भाग लेते थे?

उ. शास्त्रार्थ में विद्वानों के अतिरिक्त राजा भोज भी भाग लेते थे।

ख. राजा भोज के राज्य की भाषा कौन-सी थी?

उ. राजा भोज के राज्य की भाषा संस्कृत थी।

ग. सृष्टि और पालन का सामर्थ्य किसमें है?

उ. सृष्टि और पालन का सामर्थ्य धरती और नारी में है।

घ. राजा भोज और महाकवि माघ किस बात से चकित थे?

उ. राजा भोज और महाकवि माघ वृद्ध महिला की वाचालता पर चकित थे।

लिखिए

1. **सही उत्तर पर ✓ का निशान लगाइए—**

   क. राजा भोज की राजधानी क्या थी? ✓ धारा नगरी

   ख. परिश्रम और अभ्यास से क्या प्राप्त किया जा सकता है? ✓ ज्ञान

   ग. राजा भोज किसके साथ सैर पर निकले? ✓ माघ के साथ

2. **इन शब्दों से संबंधित वाक्य पाठ से छाँटकर लिखिए—**

   सूर्या और चंद्रमा — राही तो दो हैं— सूर्य और चंद्रमा।

   महाकाल — राजा भी दो हैं। देवताओं के राजा इंद्र और महाकाल।

   वाचालता — राजा भोज और महाकवि माघ वृद्धा की वाचालता पर चकित थे।

   परिश्रम — ज्ञान कोई भी परिश्रम और अभ्यास से प्राप्त कर सकता है।

3. **कुछ शब्दों में उत्तर दीजिए—**(Notebook)

   क. राजसभा में नवरत्न कौन कहलाते थे?

   उ. राजसभा में नवरत्न नौ विद्वानों के समूह को कहा जाता था।

   ख. राजा भोज को किस बात का अभिमान था?

   उ. राजा भोज को अपने और अपनी प्रजा के ज्ञानी होने का अभिमान था।

   ग. बूढ़ी महिला क्या कर रही थी?

   उ. बूढ़ी महिला अपने खेत की रखवाली कर रही थी।

   घ. 'रास्ता भटकने' का क्या अर्थ है?

   उ. 'रास्ता भटकने' का अर्थ होता है किसी व्यक्ति का अपने लक्ष्य, उद्देश्य, या सही दिशा से भटककर गलत दिशा में जाना।

4. **कुछ वाक्यों में उत्तर लिखिए—**(Notebook)

   क. राजा भोज और उनके राज्य का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

   उ. राजा भोज की राजधानी धारा नगरी थी। धारा नगरी में सभी व्यक्ति शिक्षित थे। सभी ज्ञान में एक से बढ़कर एक थे। वहाँ की भाषा संस्कृत थी।

   ख. महाकवि माघ और राजा भोज ने स्वयं को 'समर्थ' क्यों कहा?

   उ. महाकवि माघ और राजा भोज को अपने ज्ञान पर घमंड था इसलिए उन्होंने अपने आत्मविश्वास, काव्य और शासन में उनकी शक्ति, क्षमता और सफलता को व्यक्त करने के लिए स्वयं को 'समर्थ' कहा।

ग. पृथ्वी और नारी में सृष्टि और पालन का सामर्थ्य कैसे है?

उ. पृथ्वी और नारी दोनों में सृष्टि और पालन का सामर्थ्य है। दोनों जीवन का निर्माण, संरक्षण और पालन करती है। पृथ्वी आवश्यक पोषक तत्व, जल, वायु और तापमान जैसी जीवन के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ प्रदान करती है। नारी जीवन को जन्म देती है और उसे पोषित करती है।

घ. अंत में वृद्धा ने राजा भोज और महाकवि माघ को क्या शिक्षा दी?

उ. अंत में वृद्धा ने राजा भोज और माघ को यह शिक्षा दी कि ज्ञान किसी की निजी संपत्ति नहीं है। इसे कोई भी परिश्रम और अभ्यास से प्राप्त कर सकता है।

समझिए व्याकरण संबोध

1. **समानार्थी शब्द लिखिए—**

राजा	— नृप	भूपति	महिला	— स्त्री	नारी
सूर्य	— सूरज	दिनकर	चंद्रमा	— चाँद	शशि
अतिथि	— महमान	पाहुन	धरती	— पृथ्वी	धरा

2. **दिए गए वाक्यों को दो अलग-अलग कालों में बदलकर लिखिए—**

क. राजा भोज बहुत विद्वान थे।

उ. राजा भोज बहुत विद्वान हैं।
राजा भोज बहुत विद्वान होंगे।

ख. वह अपने खेत की रखवाली कर रही थी।

उ. वह अपने खेत की रखवाली कर रही है।
वह अपने खेत की रखवाली कर रही होगी।

ग. ज्ञान किसी की निजी संपत्ति नहीं है।

उ. ज्ञान किसी की निजी संपत्ति नहीं थी।
ज्ञान किसी की निजी संपत्ति नहीं होगी।

3. **इस पाठांश में विराम-चिह्न पर गोला लगाइए और उनका चिह्न सहित नाम लिखिए—**

महिला ने फिर कहा⊖ "बेटा, रास्ता कहीं आता⊖जाता नहीं है। यह तो सदा स्थिर रहता है। लोग ही इसपर आते⊖जाते रहते हैं। पर बेटा, तुमने अभी तक यह नहीं बताया कि तुम दोनों कौन हो?"

—	= निर्देशक चिह्न	।	= पूर्णविराम
" "	= उद्धरण चिह्न	,	= अल्पविराम
-	= योजक चिह्न	?	= प्रश्नवाचक चिह्न

4. **निम्नलिखित अशुद्ध शब्दों को शुद्ध करके लिखिए—**

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
शीक्षित	शिक्षित	अतीथि	अतिथि
अभीमान	अभिमान	बुढ़ी	बूढ़ी
सास्त्र	शास्त्र	बुद्धी	बुद्धि
राजर्मांग	राजमार्ग	सार्मथ्य	सामर्थ्य

5. **रेखांकित शब्दों के लिंग बदलकर वाक्य दोबारा लिखिए—**

क. तभी उन्हें एक <u>बूढ़ी महिला</u> दिखाई दी।

उ. तभी उन्हें एक बूढ़ा आदमी दिखाई दिया।

ख. कवि वृद्धा के सामने गिड़गिड़ाने लगे।

उ. कवयित्री वृद्ध के सामने गिड़गिड़ाने लगी।

ग. राजा और कवि दोनों सैर पर निकले।

उ. रानी और कवयित्री दोनों सैर पर निकलीं।

घ. नारी को सृष्टि और पालन का सामर्थ्य है।

उ. नर को सृष्टि और पालन का सामर्थ्य है।